जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मामनुस्मर युद्ध्य च
जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़

भारत सरकार पंजीयन नं. : 72322/91

शेखावाटी सन्मार्ग

सतीनां वै सतांचैव दातृणां विदुषां तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्गं मनोहरम्।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रूद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरूद्गणेभ्यः।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक । वर्ष–32। अंक–14। लक्ष्मणगढ 01 मई 2023 । मूल्य (विशेषांक सहित) 100 रू. वार्षिक ।

धूमधाम से निकाली भगवान् परशुराम की शोभायात्रा

लक्ष्मणगढ़ | 22 अप्रैल (निजसंवाददाता)। अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर भगवान् परशुराम जी की शोभायात्रा आयोजित की गई। श्री रघुनाथ जी के मंदिर के महंत अशोकदास महाराज ने परशुराम जी की प्रतिमा के समक्ष आरती कर शोभायात्रा को रवाना किया। भगवान् विष्णु के छठे अवतार भगवान् परशुराम की शोभायात्रा धूमधाम से गणेश जी का मंदिर, चौपड़ बाजार, कबूतरीया कुआ, पक्की प्याऊ, मुरली मनोहर मंदिर से भगवान प्रस्तावित परशुराम सर्किल पहुंची। जिसमें सर्वप्रथम विप्र महिलाएं कलश धारण करके सबसे आगे चल रही थी उनके पीछे भगवान् परशुराम की आकर्षक झांकियां सजी हुई थी जो अपने आप में जीवंत भगवान् परशुराम का दर्शन करवा रही थी। परशुराम सर्किल पहुंचने के बाद सभी विप्रजनों ने भगवान् परशुराम की आरती की तथा पूरे रास्ते में भगवान् परशुराम के नारों से कस्बे को गुंजायमान कर दिया। कस्बे की यह ऐतिहासिक शोभायात्रा थी जिसमें महिलाएं मुख्य आकर्षण का केंद्र रही जो कि लगभग 500 के करीब महिलाएं कलश धारण किए हुए शोभायात्रा में लयबद्ध तरीके से भगवान् परशुराम के जयकारे लगाते हुए साथ चल रही थी। रास्ते में जगह-जगह पुष्प वर्षा कर लोगों ने भगवान् परशुराम के जयकारे लगाए व सभी पर पुष्प वर्षा की। शोभायात्रा में भजन मंडलीयो द्वारा भजन गाकर भजनों की प्रस्तुति दी गई जिंसमे लोग नाचते गाते साथ चल रहे थे। डीजे पर युवाओं का जोश देखते ही बन रहा था। शोभायात्रा में मुकदगढ़ के संत चेतन दास महाराज, मीरण के संत मुक्ति नाथ महाराज, गाड़ोदा के संत महावीर जति महाराज, पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा, विप्र कल्याण बोर्ड के सदस्य पवन शर्मा, राजस्थान ब्राह्मण महासभा के सुभाष जोशी, राजस्थान ब्राह्मण महासभा शहर अध्यक्ष अशोक पुजारी, भाजपा किसान मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष हरिराम रणवा, भाजपा विधान सभा पूर्व प्रत्यासी दिनेश जोशी, पालिका उपाध्यक्ष बनवारी लाल पांडे, विनायक ग्रुप के सीएमडी नवरंग चौधरी, पूर्व उपप्रधान डालू राम चाहर, भाजपा नेता भागीरथ गोदारा, हरलाल धायल, ललित पवार, अमृत ख्यालिया, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष पवन सैनी, भाजपा नेता सतीश पाटोदा, भगवा रक्षा वाहिनी अध्यक्ष जय शंकर पुजारी, आलोक पाराशर, मनोज मिश्र, विष्णु भूत सहित सभी समाज के गणमान्य जन उपस्थित थे।

भगवान् परशुराम की जयन्ती पर हुआ कार्यक्रम

फतेहपुर (निजसंवाददाता)। कस्बे के श्याम सदन में शनिवार को महन्त गोपेशाचार्य महाराज के सानिध्य में सर्व ब्राहम्ण समाज की ओर से भगवान् परशुराम की जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान भगवान् परशुराम के चित्र के सामने विप्र जनों ने मंत्रोचारण के साथ पूजा अर्चना कर महाआरती की।

इस अवसर पर भजन कीर्तन का आयोजन किया गया जिसमे गायक कलाकारों सहित महिला मण्डली ने भी भजनों की प्रस्तुती दी। आयोजित कार्यक्रम के दौरान सर्व ब्राहम्ण महासभा के तहसील अध्यक्ष शिवप्रकाश जोशी, पूर्व पालिकाध्यक्ष मधुसुदन भिण्डा, ब्राहम्ण महासभा के प्रदेश प्रचार मंत्री रतन महर्षि, विप्र फाउण्डेशन के अध्यक्ष विमल चोटिया, एडवोकेट पंकज शर्मा, प्रेमप्रकाश छकड़ा, अवधेश बाबा, रामवतार रूथला, प्रदीप पारीक, अशोक बोचीवाल, एडवोकेट दीपक निर्मल, प. रामवतार जोशी, शंभु पारीक, मनीष चोटिया, मनोज माटोलिया, रमण पुरोहित, डॉ. शशीकान्त शर्मा, सुरेश पारीक, सुरेश टिडा, सूर्य प्रकाश शर्मा, पार्षद दिनेश बियाला, पवन शर्मा, राजू चोटिया, ओमप्रकाश बियाला, राजेश शर्मा, मुकेश इन्दौरिया, अनुप बियाला एव पूर्व प्रधान सुनिता कड़वासरा सहित काफी संख्या मे विप्र बन्धु उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान गायक कलाकार पंकज हरितवाल एव मोनिका पीपलवा ने भी भजनों की प्रस्तुती दी तथा प. मधुसूदन शर्मा ने मंत्रोचारण के साथ पूजा अर्चना सम्पन्न करवायी। इस दौरान कार्यक्रम मे उपस्थित विप्र जनो ने हनुमान चालिसा का पाठ किया।

परशुराम जन्मोत्सव पर निकाली भव्य शोभायात्रा

कांवट (निजसंवाददाता)। स्थानीय कस्बे में शनिवार को परशुराम जन्मोत्सव के पर्व पर विप्र समाज द्वारा विशाल शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा कस्बे के श्री कृष्ण गौशाला से शुरू हुई जो कस्बे के सीनियर स्कूल के सामने, मुख्य बस स्टैंड, नीमकाथाना रोड़, चौधरी मोहल्ला, मल्लाका मोहल्ला, राम लीला मैदान, पुराना बाजार, जोशी मोहल्ला होते हुए भगवान् परशुराम भवन में पहुंची। शोभायात्रा के दौरान भगवान् परशुराम जी की जीवंत झांकी सजाई गई। वहीं कस्बे के मुख्य आम चौक पर विप्र बंधुओ द्वारा केक काटकर भगवान् परशुराम जी का जन्मोत्सव भी मनाया गया। शोभायात्रा के दौरान दिल्ली की मशहूर प्रवीण ऋचा एंड पार्टी द्वारा रंगारंग प्रस्तुतियां दी गई।

दिल्ली की मशहूर पार्टी द्वारा महारास बड़े मोर पंख के साथ नृत्य, काली माता नृत्य दानव के साथ, सुदामा नृत्य व कॉमेडी की प्रस्तुतियां, हनुमान जी का नृत्य वानर सेना के साथ, शंकर पार्वती नृत्य, अघोरी बाबा नृत्य सहित अनेक जीवंत झांकियां सजाकर कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रस्तुतियां दी गई। कस्बे के मुख्य बस स्टैंड आम चौक पर स्टेज प्रोग्राम रखा गया जहां समस्त कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी।

अनेक स्थानों पर सर्वसमाज के लोगों व सामाजिक संगठनों द्वारा पुष्प वर्षा की गई। शोभायात्रा के दौरान कांवट सहित आस - पास के गांवों व ढाणियों से लगभग कई सैंकडों लोग उपस्थित रहे। लगभग सैंकडों महिलाओं ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान सुभाष छैला डांसर ने भी अपनी प्रस्तुति दी। परशुराम भवन में भगवान् परशुराम जी की आरती कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथः क्वचित् "

विष्णोः षष्ठावतारं परशुरामं विद्धि

परशुराम जी त्रेता युग (रामायण काल) में एक भट्ट ब्राह्मण ऋषि के यहाँ जन्मे थे। जो विष्णु के छठा अवतार हैं। पौरोणिक वृत्तान्तों के अनुसार उनका जन्म महर्षि भृगु के पुत्र महर्षि जमदग्नि द्वारा सम्पन्न पुत्रेष्टि यज्ञ से प्रसन्न देवराज इन्द्र के वरदान स्वरूप पत्नी रेणुका के गर्भ से वैशाख शुक्ल तृतीया को मध्यप्रदेश के इन्दौर जिला में ग्राम मानपुर के जानापाव पर्वत में हुआ। वे भगवान् विष्णु के आवेशावतार हैं। महाभारत और विष्णु पुराण के अनुसार परशुराम जी का मूल नाम राम था | किन्तु जब भगवान् शिव ने उन्हें अपना परशु नामक अस्त्र प्रदान किया, तभी से उनका नाम परशुराम जी हो गया। पितामह भृगु द्वारा सम्पन्न नामकरण संस्कार के अनन्तर राम कहलाए। वे जमदग्नि का पुत्र होने के कारण जामदग्न्य और शिवजी द्वारा प्रदत्त परशु धारण किये रहने के कारण वे परशुराम जी कहलाये। आरम्भिक शिक्षा महर्षि विश्वामित्र एवं ऋचीक के आश्रम में प्राप्त होने के साथ ही महर्षि ऋचीक से शार्ङ्ग नामक दिव्य वैष्णव धनुष और ब्रह्मर्षि कश्यप से विधिवत अविनाशी वैष्णव मन्त्र प्राप्त हुआ। तदन्तर कैलाश गिरिशृंग पर स्थित भगवान् शंकर के आश्रम में विद्या प्राप्त कर विशिष्ट दिव्यास्त्र विद्युदभि नामक परशु प्राप्त किया। शिवजी से उन्हें श्रीकृष्ण का त्रैलोक्य विजय कवच, स्तवराज स्तोत्र एवं मन्त्र कल्पतरु भी प्राप्त हुए। चक्रतीर्थ में किये कठिन तप से प्रसन्न हो भगवान् विष्णु ने उन्हें त्रेता में रामावतार होने पर तेजोहरण के उपरान्त कल्पान्त पर्यन्त तपस्यारत भूलोक पर रहने का वर दिया। वे शस्त्रविद्या के महान् गुरु थे। उन्होंने भीष्म, द्रोण व कर्ण को शस्त्रविद्या प्रदान की थी।

माता - पिता भक्त परशुराम - श्रीमद्भागवत में दृष्टान्त है कि गन्धर्वराज चित्ररथ को अप्सराओं के साथ विहार करता देख हवन हेतु गंगा तट पर जल लेने गई रेणुका आसक्त हो गयी और कुछ देर तक वहीं रुक गयीं। हवन काल व्यतीत हो जाने से क्रुद्ध मुनि जमदग्नि ने अपनी पत्नी के आर्य मर्यादा विरोधी आचरण एवं मानसिक व्यभिचार करने के दण्डस्वरूप सभी पुत्रों को माता रेणुका का वध करने की आज्ञा दी। अन्य भाइयों द्वारा ऐसा दुस्साहस न कर पाने पर पिता के तपोबल से प्रभावित परशुराम ने उनकी आज्ञानुसार माता का शिरोच्छेद एवं उन्हें बचाने हेतु आगे आये अपने समस्त भाइयों का वध कर डाला। उनके इस कार्य से प्रसन्न जमदग्नि ने जब उनसे वर माँगने का आग्रह किया तो परशुराम ने सभी को पुनर्जीवित होने एवं उनके द्वारा वध किए जाने सम्बन्धी स्मृति नष्ट हो जाने का ही वर माँगा।

पिता जमदग्नि की हत्या और परशुराम का प्रतिशोध - कथानक है कि हैहय वंशाधिपति कार्त्तवीर्यअर्जुन (सहस्त्रार्जुन) ने घोर तप द्वारा भगवान् दत्तात्रेय को प्रसन्न कर एक सहस्त्र भुजाएँ तथा युद्ध में किसी से परास्त न होने का वर पाया था। संयोगवश वन में आखेट करते वह जमदग्निमुनि के आश्रम जा पहुँचा और देवराज इन्द्र द्वारा उन्हें प्रदत्त कपिला कामधेनु की सहायता से हुए समस्त सैन्यदल के अद्भुत आतिथ्य सत्कार पर लोभवश जमदग्नि की अवज्ञा करते हुए कामधेनु को बलपूर्वक छीनकर ले गया। कुपित परशुराम ने फरसे के प्रहार से उसकी भुजाएँ काट डाली व सिर को धड़ से पृथक कर दिया। तब सहस्त्रार्जुन के पुत्रों ने प्रतिशोध स्वरूप परशुराम की अनुपस्थिति में उनके ध्यानस्थ पिता जमदग्नि की हत्या कर दी। रेणुका पति की चिताग्नि में प्रविष्ट हो सती हो गयी। इस काण्ड से कुपित परशुराम ने पूरे वेग से महिष्मती नगरी पर आक्रमण कर दिया और उस पर अपना अधिकार कर लिया। इसके बाद उन्होंने एक के बाद एक पूरे इक्कीस बार इस पृथ्वी से क्षत्रियों का विनाश किया। यही नहीं उन्होंने हैहय वंशी क्षत्रियों के रुधिर से स्थलत पंचक क्षेत्र के पाँच सरोवर भर दिये और पिता का श्राद्ध सहस्त्रार्जुन के पुत्रों के रक्त से किया। अन्त में महर्षि ऋचीक ने प्रकट होकर परशुराम को ऐसा घोर कृत्य करने से रोका। इसके पश्चात् उन्होंने अश्वमेघ महायज्ञ किया और सप्तद्वीप युक्त पृथ्वी महर्षि कश्यप को दान कर दी। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने देवराज इन्द्र के समक्ष अपने शस्त्र त्याग दिये और सागर द्वारा उच्छिष्ट भू-भाग महेन्द्र पर्वत पर आश्रम बनाकर रहने लगे।

क्षत्रियों का विनाश - श्रीमद्भागवत, रामायण इत्यादि पुराणों के अनुसार परशुराम ने 21 बार समस्त क्षत्रियों को समूल नष्ट किया था। क्षत्रियों का अधिपति था सहस्त्रार्जुन। परशुराम ने इसी राजा और इसके पुत्र और पौत्रों का वध किया था और इसके बाद 21 बार समस्त क्षत्रियों का वध कर दिया। हैहयवंश में 5 पुत्रों के वंश को परशुराम ने अभयदान दिया | जिससे वृष्णी वितिहोत्रा इत्यादि वंश चले वहीं बाकी क्षत्रियों का 21 बार अंत किया। जो बच्चे गर्भ में रह जाते थे वही बचते थे। ऋषि वशिष्ठ से शाप का भाजन बनने के कारण सहस्रार्जुन की मति मारी गई थी। सहस्रार्जुन ने परशुराम के पिता जमदग्नि के आश्रम में एक कपिला कामधेनु गाय को देखा और उसे पाने की लालसा से वह कामधेनु को बलपूर्वक आश्रम से ले गया। जब परशुराम को यह बात पता चली तो उन्होंने पिता के सम्मान के खातिर कामधेनु वापस लाने की सोची और सहस्रार्जुन से उन्होंने युद्ध किया। युद्ध में सहस्रार्जुन की सभी भुजाएँ कट गईं और वह मारा गया। तब सहस्रार्जुन के पुत्रों ने प्रतिशोधवश परशुराम की अनुपस्थिति में उनके पिता जमदग्नि को मार डाला। परशुराम की माँ रेणुका पति की हत्या से विचलित होकर उनकी चिताग्नि में प्रविष्ट हो सती हो गयी। इस घोर घटना ने परशुराम को क्रोधित कर दिया और उन्होंने संकल्प लिया-"मैं सभी क्षत्रियों का नाश करके ही दम लूँगा"। उसके बाद उन्होंने अहंकारी और दुष्ट प्रकृति के क्षत्रियों से 21 बार युद्ध किया।

महाभारत काल - भीष्म द्वारा स्वीकार न किये जाने के कारण अंबा प्रतिशोध वश सहायता माँगने के लिये परशुराम के पास आयी। तब सहायता का आश्वासन देते हुए उन्होंने भीष्म को युद्ध के लिये ललकारा। उन दोनों के बीच २३ दिनों तक घमासान युद्ध चला। किन्तु अपने पिता द्वारा इच्छा मृत्यु के वरदान स्वरुप परशुराम उन्हें हरा न सके। परशुराम अपने जीवन भर की कमाई ब्राह्मणों को दान कर रहे थे, तब द्रोणाचार्य उनके पास पहुँचे। किन्तु दुर्भाग्यवश वे तब तक सब कुछ दान कर चुके थे। तब परशुराम ने दयाभाव से द्रोणचार्य से कोई भी अस्त्र-शस्त्र चुनने के लिये कहा। तब चतुर द्रोणाचार्य ने कहा कि मैं आपके सभी अस्त्र शस्त्र उनके मन्त्रों सहित चाहता हूँ ताकि जब भी उनकी आवश्यकता हो, प्रयोग किया जा सके। परशुरामजी ने कहा-"एवमस्तु!" अर्थात् ऐसा ही हो। इससे द्रोणाचार्य शस्त्र विद्या में निपुण हो गये।

परशुराम कर्ण के भी गुरु थे। उन्होने कर्ण को भी विभिन्न प्रकार कि अस्त्र शिक्षा दी थी और ब्रह्मास्त्र चलाना भी सिखाया था। लेकिन कर्ण एक सूत का पुत्र था, फिर भी यह जानते हुए कि परशुराम केवल ब्राह्मणों को ही अपनी विधा दान करते हैं, कर्ण ने छल करके परशुराम से विधा लेने का प्रयास किया। परशुराम ने उसे ब्राह्मण समझ कर बहुत सी विद्यायें सिखायीं, लेकिन एक दिन जब परशुराम एक वृक्ष के नीचे कर्ण की गोदी में सर रखके सो रहे थे, तब एक भौंरा आकर कर्ण के पैर पर काटने लगा, अपने गुरुजी की नींद में कोई अवरोध न आये इसलिये कर्ण भौंरे को सेहता रहा, भौंरा कर्ण के पैर को बुरी तरह काटे जा रहा था, भौरे के काटने के कारण कर्ण का खून बहने लगा। वो खून बहता हुआ परशुराम के पैरों तक जा पहुँचा। परशुराम की नींद खुल गयी और वे इस खून को तुरन्त पहचान गये कि यह खून तो किसी क्षत्रिय का ही हो सकता है जो इतनी देर तक बगैर उफ़ किये बहता रहा। इस घटना के कारण कर्ण को अपनी अस्त्र विद्या का लाभ नहीं मिल पाया।

एक अन्य कथा के अनुसार एक बार गुरु परशुराम कर्ण की एक जंघा पर सिर रखकर सो रहे थे। तभी एक बिच्छू कहीं से आया और कर्ण की जंघा पर घाव बनाने लगा। किन्तु गुरु का विश्राम भंग ना हो, इसलिये कर्ण बिच्छू के दंश को सहता रहा। अचानक परशुराम की निद्रा टूटी और ये जानकर की एक ब्राम्हण पुत्र में इतनी सहनशीलता नहीं हो सकती कि वो बिच्छू के दंश को सहन कर ले। कर्ण के मिथ्याभाषण पर उन्होंने उसे ये श्राप दे दिया कि जब उसे अपनी विद्या की सर्वाधिक आवश्यकता होगी, तब वह उसके काम नहीं आयेगी। अर्तिथ में आप को बता दू जो बिच्छू कर्ण की जांघ पर आया था वो भगवान इंद्रदेव थे इंद्रदेव पता लगाने आए थे की इतना शक्तिशाली एक भ्रमण पुत्र नही हो सकता क्योंकि कर्ण ने अपनी धनुर विद्या और दिव्य शक्ति से इंद्रदेव को भी परास्त कर दिया था और इसी कारण इंद्रदेव को पता चला की कर्ण ना तो क्षेत्रय और न ब्राम्हण कुल के है और पता चला कर्ण एक शुद्र पुत्र थे |

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

सेवा-सृजन दिवस के रूप में मनाई
"भाई साहब" की दसवीं पुण्यतिथि

लक्ष्मणगढ़ | 25 अप्रेल 2023 (निजसंवाददाता)। शेखावाटी के गांधी उपनाम से विख्यात परोपकार की मूर्ति, सेवा के प्रतीक, शिक्षा जगत की महान् विभूति, पूजनीय 'स्व. सांवर शर्मा 'भाई साहब' के दसवें निर्वाण दिवस को उनकी मुख्य कर्मस्थली, स्वनाम धन्य, शिक्षा का नन्दन कानन बगड़िया बाल विद्या निकेतन में सेवा-सृजन दिवस के रूप में श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम स्व. श्री सांवर शर्मा के आवक्ष चित्र पर पुष्पहार अर्पण व दीप प्रज्जवलन के पश्चात् पुष्पांजलि अर्पित कर विभिन्न वक्ताओं ने उन्हें संस्मरणों, कक्षाओं में अध्यापन के साथ - साथ समाज सेवा के अन्यान्य प्रेरक कार्यो को याद किया। सभा में निकेतन सचिव पवन गोयनका, प्राचार्य बी. एड. कॉलेज डॉ. नरेश दाधीच, प्राचार्या निकेतन श्रीमती मधुलिका मिश्र, संवाददाता व प्रसिद्ध गायक पवन शर्मा 'निर्मल', मॉण्टेसरी प्रभारी श्रीमती निधी जोशी मंचस्थ थे |

महाविद्यालय व्याख्याता अश्विनी पारीक, वरिष्ठ शिक्षक नरेश कुमार, संगीत शिक्षक सवाई सिंह ने अपने भाव प्रस्तुत किये | वहीं मंचस्थ महानुभावों ने उनकी द्वारा किये गये अनेकों सेवा कार्य के बारे मे बताया। शिक्षा सेवा को सर्वोपरी मानने वाले 'भाई साहब' को छात्र-छात्राएं, शिक्षक, कर्मचारी एर्व पुरातन छात्र कमल तिवाडी, शशांक जोशी आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की और गायक पवन शर्मा' निर्मल', संगीत शिक्षक सवाई सिंह व छात्रा खुशी एवं हिमांशी के प्रेरणा व भक्ति गीतों की धुनों में सभी सराबोर हो गए। निकेतन समुदाय ने उस महान् पारखी, दूरदर्शी शिक्षक को कृतज्ञता के साथ याद किया | जिन्होंने इस तरह की मजबूत नींव वाले संस्थान की संस्थापकों में से एक थे। कार्यक्रम का संचालन निकेतन के लेखापाल शुभकरण शर्मा ने किया। संस्था के पुरातन छात्र व पूर्व केंद्र सरकार के मंत्री सुभाष महरिया ने स्व. सांवर शर्मा को श्रद्धांजली अर्पित की।

लक्ष्मणगढ़ के लाल ने विदेशी धरती पर लहराया प्रतिभा का परचम

लक्ष्मणगढ़ | 22 अप्रैल (निजसंवाददाता)। अक्षय तृतीया पर यहां के विप्र परिवार को खुशियों की सौगात मिली है। परिवार के लाडले व लक्ष्मनगढ के लाल ने विदेशी धरती पर अपनी प्रतिभा का परचम लहराकर परिवार का मान व नगर का गौरव बढ़ाया है।

सेवानिवृत्त राजकीय वैद्य स्व. वासुदेव शर्मा के पोत्र व सूरत प्रवासी अशोक शर्मा के सुपुत्र पुष्पक शर्मा की जिसने विदेशी धरा पर आईटी सेक्टर में अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया है। पारिवारिक सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पुष्पक लेमिंटन कालेज मिसिसागा कनाडा में कंप्यूटर साइंस में मास्टर डिग्री कर रहे हैं। जहां अध्ययन के दौरान सैकेंड टर्म सैकेंड रैंक हासिल कर अपनी प्रतिभा का परचम लहराया है। उल्लेखनीय है कि पुष्पक का इससे पहले इंटर एक्सचेंज भारत सरकार में इंजीनियरिंग के लिए हुआ था जो सफलता पूर्वक वरक्कल यूनिवर्सिटी पोलैंड से पूर्ण की थी ।

राजकुमार पारीक लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार से होंगे सम्मानित
राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस पर हुई घोषणा

लक्ष्मणगढ़ | 21 अप्रैल (निजसंवाददाता)। शुक्रवार को राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के अवसर पर पब्लिक रिलेशंस एंड एलाइड सर्विस एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (प्रसार) की बीकानेर इकाई द्वारा दिए जाने वाले वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा हुई |

प्रसार के प्रदेश उपाध्यक्ष (क्षेत्रीय) हरि शंकर आचार्य ने बताया कि इस वर्ष का घनश्याम गोस्वामी स्मृति लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार जनसंपर्क विभाग के सेवानिवृत्त सहायक निदेशक लक्ष्मणगढ़ निवासी राजकुमार पारीक को दिया जाएगा। जबकि किशन कुमार व्यास 'आजाद' स्मृति जनसंपर्क रत्न अवार्ड विभाग के सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक प्रभात गोस्वामी को अर्पित किया जाएगा।

प्रसार की बीकानेर इकाई द्वारा वर्ष 2020 से प्रतिवर्ष यह सम्मान दिया जा रहा है। इसी श्रृंखला में इस वर्ष के पुरस्कार घोषित हुए। राजकुमार पारीक लक्ष्मणगढ़ के रहने वाले हैं | इन्होंने सीकर, चूरू, झुंझुनू सहित विभिन्न जिलों में अपनी सेवाएं दी। पारीक को संभाग स्तरीय जल मित्र पुरस्कार से भी नवाजा जा चुका है। वहीं बीकानेर मूल के प्रभात गोस्वामी ने लंबे समय तक मुख्यमंत्री कार्यालय में अपनी सेवाएं दी। गोस्वामी अंतरराष्ट्रीय स्तर के कॉमेंटेटर और व्यंग्य लेखक हैं।

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की मूर्ति का हुआ लोकार्पण

लक्ष्मणगढ़ (निजसंवाददाता)। उपखंड क्षेत्र के नरोदड़ा गाँव में अंबेडकर नवयुवक मंडल के सौजन्य से गाँव के पश्चिमी भाग स्थित वर्मा कॉलोनी में संविधान के निर्माता तथा दलितों, शोषितों और पीड़ितों के मसीहा बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की आदमकद मूर्ति का लोकार्पण सांगलिया धूणी के पीठाधीश्वर श्री ओम् दास महाराज के कर कमलों से किया गया। आरम्भ में ओम् दास महाराज को मोदी विश्वविद्यालय से कार्यक्रम स्थल तक गाजे बाजे के साथ लाया गया। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष दिनेश जोशी, भाजपा नेता भागीरथ गोदारा, अंतराष्ट्रीय खिलाड़ी एवं बॉक्सर प्रियंका आदि मंचस्थ रहे। मंचस्थ अतिथियों का माल्यार्पण एवं बाबा साहेब की प्रतिमा भेंट कर स्वागत किया गया। अपने उद्बोधन में प्रियंका ने कहा कि वर्तमान युग में शिक्षा के विकास से ही सर्वांगीण विकास संभव है और बेटियों को भी उतना ही महत्व दिया जाए, जितना कि बेटों को दिया जाता है। साथ ही महिलाओं पर हो रहे जुल्मों पर खेद व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यदि शिक्षा के विकास के तहत गाँव में पुस्तकालय बनता है तो वे मुक्तहस्त से सहयोग करेंगी।

संत शिरोमणि ओम् दास महाराज ने कहा कि दलित, शोषित और पीड़ित परिवार अब इतिहास बन गए हैं और समाज हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है जो समाज के लिए गौरव की बात है। कार्यक्रम को दिनेश जोशी, सुभाष महरिया, भागीरथ गोदारा आदि ने भी संबोधित किया। इस दौरान सरपंच द्वारा पूरी कॉलोनी में करवाई गई इंटरलॉकिंग और विकास कार्यों के लिए ग्राम पंचायत के सरपंच की प्रशंसा की गई। इस अवसर पर सरपंच महेंद्र सिंह ख्यालिया, विद्याधर ख्यालिया, नेमीचंद ख्यालिया,पंचायत समिति सदस्य अमृत ख्यालिया, मोहन बाबूजी, रामकुमार भजनी, जीताराम भूकर, रामसेवक शर्मा, परमेश्वर लाल दाधीच, सांवरमल शर्मा, लिखमाराम वर्मा, विनोद सोलड़ा, गोविंद ख्यालिया, पार्षद पवन वाल्मीकि, रतनलाल बठोठ, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी नाथूराम मेहरड़ा, सतवीर ख्यालिया, प्यारेलाल कटारिया, गोविंदराम, एडवोकेट राजेश शिवरान, गणेशराम पंडा, मालाराम ख्यालिया,भाजपा नेता हरलाल धायल, भूपसिंह पूनिया, अरुण चौधरी, बालसिंह पालड़ी, शिक्षाविद देवेंद्र ख्यालिया, बिरधीचन्द ख्यालिया, जैताराम,सहकारी समिति सदस्य फूलसिंह ख्यालिया,सतवीर ख्यालिया, हरलाल सुंडा, गणेशराम ख्यालिया,बीस सूत्री कार्यक्रम सदस्य सज्जन हापास,अर्जुनराम जसरासर, महेश पालड़ी, सांवरमल ख्यालिया, बनवारीलाल, महावीर प्रसाद ख्यालिया, राजेश कंपाउंडर, राजेन्द्र वर्मा, राजपाल वर्मा,व्याख्याता राजेंद्र वर्मा सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण एवं मातृशक्ति उपस्थित थी। कार्यक्रम संयोजक एवं समाजसेवी अमित वर्मा ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। संचालन रमाकांत दैया ने किया।

भारतीय स्कूल में पृथ्वी दिवस मनाया

लक्ष्मणगढ़ (निजसंवाददाता)। भारतीय शिक्षण संस्थान, लक्ष्मणगढ़ में पृथ्वी दिवस पर लघु नाटिकाओं एवं पोस्टर के माध्यम से पृथ्वी पर बढ़ते तापमान, घटते हुए जंगलों पर विद्यार्थियों ने प्रस्तुतियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। संस्था निदेशक रामस्वरूप महला, व्यवस्थापक मनोज कुमार रुलानिया एवं सचिव कविता महला ने बताया कि जल, मृदा एवं वायु संरक्षण और ग्लोबल वार्मिंग से पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव से बचने का सामूहिक प्रयास करना चाहिए।

स्व. चिरंजीलाल मुरारका की 18 वीं पुण्यतिथि मनाई

लक्ष्मणगढ़ (निजसंवाददाता)। लक्ष्मणगढ़ भाजपा के प्रथम मण्डल अध्यक्ष चिरंजीलाल मुरारका की 18 वीं पुण्यतिथि पर चिरंजीलाल बादामी देवी मुरारका बस डिपो लक्ष्मणगढ़ पर उनके सुपुत्र काशीप्रसाद मुरारका द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम में उपस्थित सर्वसमाज के गणमान्य जनों ने स्व. चिरंजीलाल मुरारका द्वारा किये गए कार्यो को याद किया और उनकी प्रतिमा पर फूल माला भेंट कर पुष्पांजलि अर्पित की गई। बस डिपो लक्ष्मणगढ़ सीकर पर आने जाने वाले सभी यात्रियों को ठण्डा पानी, शीतल पेय जलजीरा, फ्रूटी ज्युस आदि का वितरण किया गया। इस अवसर पर सीकर जिला सांसद सुमेधानन्द सरस्वती, भाजपा विधानसभा प्रत्याशी दिनेश जोशी, भाजपा के वरिष्ठ नेता जयप्रकाश सरावगी, भाजपा मण्डल अध्यक्ष मधुसूदन दायमा, भाजपा नेता अरूण चौधरी, भाजपा युवा नेता ललित पंवार, पूर्व जिला संघ चालक राजकुमार खीरवेवाला, आदर्श विद्या मंदिर के व्यवस्थापक पुरूषोत्तम मिश्रा, मंत्री मुरारी लाल महर्षि, सेवानिवृत्त नगरपालिका कर्मचारी दिनदयाल जोशी, गौ सेवक संजय जोशी, अतुल जाजोदिया, दिनेश सांडिया, अंकित मंगलुणेवाला चिन्टु जालाण, राजेश खाखल, भवानी शंकर जाजोदिया, दीपक जाजोदिया रामोतार जांगिड़ विनीत सोनी सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहें ।

शेखावाटी युवा महोत्सव हुआ सम्पन्न

सीकर (निजसंवाददाता)। राजस्थान युवा बोर्ड और जिला प्रशासन सीकर द्वारा एसके मेडिकल कॉलेज सांवली में आयोजित हो रहे दो दिवसीय संभाग स्तरीय शेखावटी युवा महोत्सव का बुधवार को राजस्थान युवा बोर्ड अध्यक्ष सीताराम लाम्बा की अध्यक्षता में समापन समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में विभिन्न दुर्लभ और विलुप्त होती कला प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालय, शिवसिंहपुरा तथा बजाज रोड़ सीकर की बालिकाओं ने राजस्थानी लोक संस्कृति गीतों पर प्रस्तुतियां दी। वहीं विलुप्त होती राजस्थानी कला एवं संस्कृति पर आधारित गोवंश की रक्षा करने वाले वीर तेजाजी के गीत पर श्रीराम कुमावत और उनकी टीम द्वारा बेहतरीन सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई |

कार्यक्रम में युवा बोर्ड अध्यक्ष सीताराम लाम्बा ने कहा कि संभाग स्तरीय शेखावाटी युवा महोत्सव में जिला प्रशासन के सभी विभागों ने कार्यक्रम के आयोजन क एक चुनौती के रूप में लेकर सकारात्मक सहयोग के साथ अपने-अपने विभागों को दिए दायित्व का बखूबी निर्वहन किया | उन्होंने कहा मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की मंशा है कि युवा अपनी प्रतिभा को निखारकर अपने गांव, देश-प्रदेश का नाम रोशन करें, राजस्थान युवा बोर्ड ऐसी प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए अवसर देने का मंच प्रदान कर रहा है।

उन्होंने युवाओं का आह्वान किया युवा अपना लक्ष्य निर्धारित कर कि आगे बढ़ेंगे तो उन्हें सफलता जरूर मिलेगी। समापन कार्यक्रम के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर राकेश कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि राजस्थान की विलुप्त होती कलाओं के संरक्षण के लिए यह पहली तरह का कार्यक्रम था जिसको जिला प्रशासन सीकर के सभी विभागों और सम्बन्धित जिलों के प्रशासन द्वारा आपसी समन्वय रखकर सफलता पूर्वक आयोजित किया ।

इस दौरान कार्यक्रम में यूआईटी सचिव राजपाल यादव, एसडीएम सीकर जय कौशिक, सीडीईओ विनोद जानू, प्रिंसीपल मेडिकल कॉलेज रामरतन कोचर, डीएसओ कपिल उपाध्याय, सहायक निदेशक जनसम्पर्क पूरणमल, सहायक निदेशक प्रशासनिक सुधार विभाग राकेश कुमार लाटा, शेखावाटी युवा महोत्सव समन्वयक सुदेश पूनिया, डॉ. रामरतन यादव, बीसूका सदस्य प्रेम सैनी उपस्थित रहे |

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति का हीरक जयंती समारोह हुआ

साहित्य के क्षेत्र में साहित्यकार महरिया व संस्कृति के क्षेत्र में शिक्षाविद् जोशी हुए सम्मानित

लक्ष्मणगढ़ 30 अप्रैल (रवि पुरोहित)। श्रीडूंगरगढ़ स्थित राष्ट्रीय राज मार्ग पर संस्कृति भवन में रविवार को सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के हीरक जयंती समारोह में विभिन्न सेवा क्षेत्रों में कार्य करने वाली विभूतियों को सम्मानित किया गया । लक्ष्मणगढ़ से साहित्य के क्षेत्र में साहित्यकार विमला महरिया व संस्कृति के क्षेत्र में शिक्षाविद् आचार्य नटवरलाल जोशी को सम्मानित किया गया। आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्व विद्यालय के उपकुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत थे | जबकि अध्यक्षता संगीत नाटक अकादमी के पूर्व सचिव डॉ. डी.बी. क्षीरसागर ने की। समारोह के मुख्य वक्ता साहित्यकार डॉ. चेतन स्वामी थे | जबकि विशिष्ट अतिथि महाराजा गंगासिंह विश्व विद्यालय के अतिरिक्त कुल सचिव डॉ. बिट्ठल बिस्सा थे । समारोह को संस्था अध्यक्ष श्याम महर्षि, स्वगताध्यक्ष भामाशाह भीखमचंद पुगलिया, विधायक गिरधारी लाल महिया लेखक, कवि, साहित्यकार, समीक्षक एवं जैवविविधता विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप कुमार दीप, नगर पालिका अध्यक्ष मानमल शर्मा ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन साहित्यकार रवि पुरोहित ने किया। इससे पूर्व राजेन्द्र स्वर्णकार की सरस्वती वंदना से शुरू हुए इस कार्यक्रम में अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्वलित किया। इस अवसर पर मंगलाराम गोदारा, गिरधारीलाल महिया, लक्ष्मीनारायण सोमाणी, भीखमचंद पुगलिया, सुशील कुमार बाहेती, गिरधारीलाल खटनाणी, जुगल किशोर तावणिया, निर्मल बोथरा, बजरंगलाल तापड़िया, गोविंद ग्रोवर, छगनलाल सेवदा, महावीर प्रसाद माली, विजय महर्षि, विनोद कुमार सिखवाल का शॉल एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया। इसके अलावा शिक्षा क्षेत्र में डॉ. राधाकिशन सोनी, समाज सेवा में ओम प्रकाश स्वामी, आरती कोचर, श्रीगोपाल व्यास, पत्रकारिता में गिरीराज हर्ष, चित्रकला में सन्नू हर्ष, संस्कृति क्षेत्र में नटवरलाल जोशी, पर्यावरण में ताराचंद इंदौरिया, योग में श्याम सुन्दर आर्य, गौ सेवा में शोभाचंद आसोपा, कृषि नवाचार में श्रवण कुमार भाम्भू, बाल साहित्य में अब्दुल समद राही, साहित्य क्षेत्र में विमला महरिया, राजेन्द्र शर्मा मुसाफिर, किशन दाधीच, मुकेश पोपली, शकूर बीकाणवी, खेल समीक्षक में आत्माराम भाटी तथा श्रेष्ठ संस्था नगरश्री लोक संस्कृति शोध संस्थान को सम्मानित किया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष रामचंद्र राठी, इंद्र भादाणी, ललित बाहेती, श्रीगोपाल राठी, सत्यव्रत पुगलिया, निर्मल पुगलिया, प्रेम बचा, ओंप्रकाश गांधी, धर्मचंद धाडेवा, तुरजमल बोधिजा, एस. कुमार सिंधी, शिव स्वामी, बजरंग शर्मा, सत्यदीप, मदन सैनी आदि मौजूद थे।

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्त जोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थान | कृष्णा प्रिन्टर्स के लिये सागर कम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित | प्रबन्ध सम्पादक- डॉ. महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी
शेखावाटी सन्मार्ग को online पढ़ने के लिये www.srrividya.com वेब साईट विजिटकरें |